सीएसआईआर–सीरी, पिलानी में राष्ट्रीय गीत ‘वंदेमातरम्’ के 150 वर्ष पूर्ण होने पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन

भारत के राष्ट्रीय गीत ‘वंदेमातरम्’ की रचना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सीएसआईआर–केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीरी), पिलानी में 17 नवंबर, 2025 को एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्थान के सभागार में आयोजित यह आयोजन एक ऐतिहासिक क्षण का स्मरण ही नहीं अपितु राष्ट्रभावना, सांस्कृतिक गौरव तथा स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरक स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का अवसर भी था। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीरी के वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक सहकर्मियों के साथ-साथ पिलानी एवं आसपास के क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों एवं कॉलेज के विद्यार्थी एवं शिक्षक भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में अध्यक्षीय संबोधन देते हुए
डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक **डॉ. पी. सी. पंचारिया** ने की। अपने संबोधन में उन्होंने ‘वंदेमातरम्’ की रचना की साहित्यिक पृष्ठभूमि, उसके सांस्कृतिक महत्व, और स्वतंत्रता आंदोलन में इस गीत द्वारा जगाई गई देशभक्ति की भावना एवं स्वतंत्रता आंदोलन में इसके योगदान पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि श्री बंकिम चंद्र चटर्जी ने 1875 में जब इस गीत की रचना की, तब भारत सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा था, और इस गीत ने उस समय देशवासियों में नई चेतना भरने का कार्य किया। उन्होंने बताया कि भारत की संविधान सभा ने 24 जनवरी 1950 को ‘वंदेमातरम्’ को ‘राष्ट्रीय गीत’ का दर्जा देकर इसे राष्ट्र की अस्मिता का अभिन्न अंग बना दिया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में इस गीत के योगदान पर भी प्रकाश डाला। **डॉ सुचंदन पाल**, मुख्य वैज्ञानिक ने बताया कि यह गीत ‘आनंदमठ’ नामक उपन्यास में संकलित होने के पश्चात पूरे देश में लोकप्रिय हुआ और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संघर्ष, त्याग एवं बलिदान का प्रतीक बन गया।

कार्यक्रम में सहकर्मियों एवं विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए श्री प्रमोद तँवर, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक (पीएमई प्रमुख)

पीएमई प्रमुख **श्री प्रमोद तँवर**, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने इस अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों का आह्वान करते हुए कहा कि राष्ट्रगीत के भावों ‘मातृभूमि की वंदना, प्रकृति की महिमा और देशभक्ति के उत्कर्ष’ को समझना और आत्मसात करना हर नागरिक का कर्तव्य है। इस कार्य में विद्यार्थियों और शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ हिंदी अधिकारी **श्री रमेश बौरा** ने किया। कार्यक्रम-संचालन के दौरान उन्होंने ‘राष्ट्रीय गीत (वंदेमातरम्)’ के बारे में बताते हुए कहा कि ‘वंदेमातरम्’ केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारतीयों की आत्मा को झकझोरने वाला राष्ट्र जागरण का मंत्र सिद्ध हुआ, जिसने लाखों युवाओं

को स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि इस गीत को 'राष्ट्रगान (जन-गण-मन)' के रचयिता पं. रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लयबद्ध किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित सहकर्मियों, विद्यार्थियों आदि ने 'वंदेमातरम्' का सामूहिक गायन किया और इसके रचयिता श्री बंकिमचंद्र चटर्जी को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। इस सामूहिक गायन ने वातावरण को देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कर दिया।

सभागार में राष्ट्रीय गीत का वाचन करते हुए निदेशक, सीएसआईआर-सीरी एवं उपस्थित सहकर्मी तथा अन्य अतिथि

राष्ट्रीय गीत गाते हुए सहकर्मी एवं अतिथि

यह आयोजन सीएसआईआर-सीरी के कार्मिकों और स्थानीय विद्यालयों के लिए एक प्रेरक अनुभव रहा, जिसने सभी को राष्ट्र के प्रति समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा और सम्मान की भावना से भर दिया। स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम में ऊर्जा और उत्साह का संचार किया।